मछुआरा और उसकी पत्नी

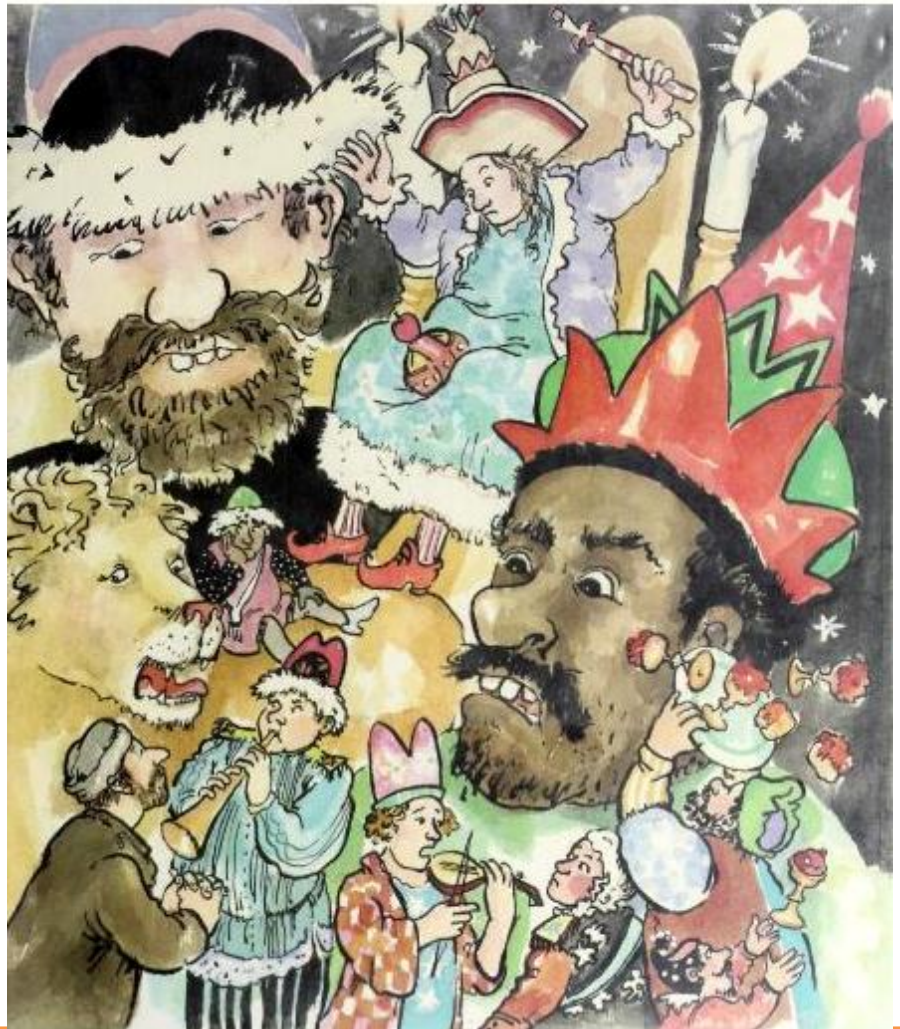

मछुआरा और उसकी पत्नी

मछुआरा और उसकी पत्नी

ग्रिम ब्रदर्स

PUBLIC LIBRARY
WEST ORANGE AVENUE

एक समय की बात है. एक मछुआरा और उसकी पत्नी, समुद्र के किनारे, सूअरों के बाड़े में रहते थे. वह आदमी हर दिन मछलियाँ पकड़ने जाता था. वह मछलियाँ पकड़ता रहता था, पकड़ता रहता था.

एक दिन समुद्र में कांटा डाले वह बैठा हुआ था और साफ, निर्मल पानी को लगातार देख रहा था. वह बैठा रहा और बैठा रहा.

तभी उसका कांटा पानी में नीचे, बहुत नीचे, चला गया. जब उसने कांटा ऊपर खींचा तो कांटे में एक बड़ा फ्लाउंडर फंसा हुआ मिला. बाहर आते ही फ्लाउंडर ने उससे कहा: "मछुआरे, मेरी बात सुनो. मैं विनती करता हूँ, मुझे जीवित छोड़ दो. मैं मछली नहीं हूँ. मैं एक राजकुमार हूँ जिसे किसी ने जादू से मछली बना दिया है. मुझे मार कर तुम्हें क्या मिलेगा? वैसे भी मेरा माँस स्वादिष्ट न होगा. मुझे पानी में वापस डाल दो और मैं तैर कर दूर चला जाऊँगा."

"अह," मछुआरे ने कहा. "तुम्हें इतना सब कहने की कहने की आवश्यकता नहीं थी-एक फ्लाउंडर जो बोल सकता है उसे तो मैं वैसे ही जीवित छोड़ देता." इतना कह कर उसने मछली को पानी में डाल दिया. फ्लाउंडर झट से तैर कर समुद्र के अंदर चला गया और अपने पीछे पानी में खून की एक लकीर छोड़ गया. मछुआरा सूअर के बाड़े में प्रतीक्षा करती अपनी पत्नी के पास लौट आया.

"पतिदेव," पत्नी ने कहा, "क्या आज कोई मछली नहीं पकड़ी?"

"नहीं," आदमी ने कहा, "मैंने एक फ्लाउंडर पकड़ा था लेकिन उसने कहा कि वह एक राजकुमार था जिसे किसी ने जादू से मछली बना दिया था, इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया."

"तुम्हारा कहना है कि तुम ने अपनी कोई इच्छा पूरी करने को उससे नहीं कहा?" पत्नी बोली.

"नहीं," आदमी ने कहा. "मैं किस लिए कोई अभिलाषा करूँ?"

"हे भगवान," पत्नी बोली, "इस गंदे, बदबूदार सूअर के बाड़े में जीवन भर रहना बहुत ही गलत है. कम से कम अपने लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी तुम मांग सकते थे. वापस जाओ और उसे पुकारो. उसे कहो कि हमें एक छोटी झोंपड़ी चाहिए. फ्लाउंडर तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी करेगा."

"अह," मछुआरे ने कहा. "मैं किस लिए वापस जाऊँ?"

"क्यों," पत्नी ने कहा, "तुम ने उसे पकड़ा और फिर तुम ने ही उसे छोड़ दिया. वह अवश्य तुम्हारा कहा मानेगा. अभी इसी समय जाओ." मछुआरा सच में नहीं जाना चाहता था. फिर भी वह अपनी पत्नी की बात ठुकराना न चाहता था, इसलिए वह सागर की ओर गया.

जब वह तट पर पहुँचा तो सागर का पानी हरे और पीले रंग का था और पहले जितना साँफ न था. वह तट के किनारे खड़ा हो गया और बोला:

फ्लाउंडर, फ्लाउंडर सागर में रहते हो तुम
मैं बुलाता हूँ, जल्दी से आ जाओ तुम
मेरी पत्नी ने है अब भेजा मुझको
एक कामना उसकी पूरी कर दो तुम.

तभी फ्लाउंडर तैरता हुआ उसके पास आया और बोला, “वह क्या चाहती है?”

“अह,” मछुआरे ने कहा, “मैंने तुम्हें पकड़ा था, इसलिए मेरी पत्नी कहती है कि मुझे अपनी कोई इच्छा तुम्हें बतानी चाहिए. अब वह सूअर के बाड़े में नहीं रहना चाहती. वह रहने के लिए एक झोंपड़ी चाहती है.”

“बस वापस लौट जाओ,” फ्लाउंडर ने कहा, “उसे पहले ही झोंपड़ी मिल चुकी है.”

फिर वह आदमी घर गया और अब उसकी पत्नी सूअर के बाड़े में नहीं थी. वहाँ एक छोटी-सी झोंपड़ी थी और उसकी पत्नी झोंपड़ी के दरवाज़े के सामने एक बैंच पर बैठी थी. उसकी पत्नी ने उसकी बाँह पकड़ ली और बोली, “ज़रा भीतर चलो.” वह अंदर गए. झोंपड़ी के अंदर एक छोटा हॉल था, एक सुंदर छोटी बैठक और बिस्तरों से सुसज्जित एक शयनकक्ष था और एक रसोई और एक भंडार भी था, जहाँ बढ़िया बर्तन रखे थे, जिन में से कुछ टिन के और कुछ पीतल के थे. जो कुछ भी घर में होना चाहिए वह सब वहाँ था. और पीछे एक अहाता था जहाँ मुर्गियाँ और बतखें थीं और एक छोटा बग़ीचा था जिसमें सब्ज़ियाँ और फलों के पेड़ लगे थे.

“देखो,” पत्नी ने कहा, “क्या यह सब अच्छा नहीं है?”

“हाँ,” आदमी ने कहा, “और सब कुछ ऐसे ही रहने दो. अब हम सच में संतुष्ट रहेंगे.”

“उसके विषय में हम बाद में सोचेंगे,” उसकी पत्नी ने कहा. फिर उन्होंने खाना खाया और सो गए.

एक या दो सप्ताह तक सब ठीक ही चला, फिर एक दिन पत्नी ने कहा, “सुनो पतिदेव, यह झोंपड़ी बहुत छोटी है और बाहर का अहाता और बग़ीचा तो बिलकुल छोटे हैं. फ्लाउंडर आसानी से हमें एक बड़ा घर भी दे सकता था. सच में, मैं पत्थरों के बने एक विशाल महल में रहना चाहती हूँ. उस फ्लाउंडर के पास जाओ और उसे एक महल देने के लिए कहो.”

“अह, बीवी,” आदमी ने कहा, “यह झोंपड़ी हमारे लिए पर्याप्त है. हम एक महल में किस लिए रहना चाहते हैं?”

“बेकार बात,” पत्नी बोली. “बस तुम अभी जाओ. फ्लाउंडर हमारी कोई भी इच्छा पूरी कर सकता है.”

“नहीं, बीवी,” आदमी ने कहा, “फ्लाउंडर ने अभी हमें यह झोंपड़ी दी है. मैं उसके पास नहीं जाना चाहता. फ्लाउंडर को गुस्सा आ सकता है.”

“फिर भी तुम जाओ,” पत्नी ने कहा. “वह कर सकता है. हमारी इच्छा पूरी कर उसे खुशी ही होगी. बस तुम जाओ.”

मछुआरा दुःखी था. वह जाना न चाहता था. उसने अपने आप से कहा, “वह उचित नहीं है.” लेकिन फिर भी वह गया.

जब वह समुद्र के पास पहुँचा तो पानी बैंगनी और गहरे नीले और स्लेटी रंग का था और पहले जैसा हरा और पीले रंग का न था. लेकिन समुद्र अभी भी शांत था. वह किनारे पर खड़ा हो गया और बोला:

फ्लाउंडर, फ्लाउंडर सागर में रहते हो तुम
मैं बुलाता हूँ, जल्दी से आ जाओ तुम
मेरी पत्नी ने है भेजा मुझको
एक कामना उसकी पूरी कर दो तुम.

"तो अब उसे क्या चाहिए?" फ्लाउंडर ने पूछा.

"अह," मछुआरे ने कहा. वह परेशान था. "वह पत्थरों से बने एक बड़े महल में रहना चाहती है."

"बस वापस लौट जाओ, वह पहले ही महल के दरवाज़े के सामने खड़ी है," फ्लाउंडर ने कहा.

मछुआरा लौट आया और उसे लगा कि वह घर जा रहा था, लेकिन जब वहाँ पहुँचा तो वहाँ पत्थरों का एक बड़ा महल था. महल के अंदर जाने को तैयार, उसकी पत्नी प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर खड़ी, थी. उसने पति की बाँह पकड़ ली और कहा, "चलो, भीतर चलो."

वह दोनों महल के भीतर आ गए. अंदर एक बड़ा हॉल था जिसका फर्श संगमरमर का था. बहुत सारे नौकर थे जो बड़े-बड़े दरवाज़े खोल रहे थे. दीवारें चमकीली थीं, जिन पर सुंदर चित्रपट लटके थे. कमरों में शुद्ध सोने की बनी मेज़ें और कुर्सियाँ थीं और छत्तों से क्रिस्टल के फानूस लटक रहे थे. फर्श पर कालीन बिछे थे. मेज़ों पर ढेर सारा बढ़िया खाना और वाइन सजी थी, इतनी अधिक कि लगता था बोझ से मेज़ें टूट जायेंगी. महल के पीछे बड़ा आँगन था, जहाँ घोड़ों और गायों के लिए एक अस्तबल था, उत्तम गाड़ियाँ थीं और एक आलिशान बाग़ था जिसमें सुंदर फूल और फलों के पेड़ लगे थे और एक पार्क था जो लगभग आधा मील लंबा था. वहाँ हिरण और बारहसिंगे थे और वैसी हर वस्तु थी जिसकी कामना वह कर सकते थे. उसकी पत्नी ने कहा, "क्या यह सब अच्छा नहीं है?"

"हाँ, बेशक," मछुआरे ने कहा, "और सब कुछ ऐसा ही रहने दो-अब हम इस महल में रहेंगे और संतुष्ट रहेंगे." "हम इसके बारे में बाद में सोचेंगे," पत्नी बोली. "और अब हम इन आरामदायक बिस्तरों पर सोयेंगे." इतना कह कर वह बिस्तर में लेट गए.

अगली सुबह पत्नी पहले उठी. दिन निकला ही था. अपने बिस्तर से पत्नी ने खिड़की के बाहर की सुंदर धरती देखी. मछुआरा अभी अँगड़ाई ही ले रहा था कि पत्नी ने उसकी पसलियों में अपनी कोहनी चुभाई और कहा, "पतिदेव, उठो और बाहर देखो. क्या हम उस सारी जगह के राजा नहीं बन सकते? उस फ्लाउंडर के पास जाओ और कहो कि वह हमें राजा बना दे."

"अह, बीवी," मछुआरे ने कहा, "हम किस लिए राजा बने? मैं राजा नहीं बनना चाहता."

"ठीक है," पत्नी ने कहा. "अगर तुम राजा नहीं बनोगे तो मैं राजा बनूँगी. फ्लाउंडर के पास जाओ क्योंकि मैं राजा बनना चाहती हूँ."

"अह, बीवी," मछुआरे ने कहा, "तुम राजा क्यों बनना चाहती हो? मैं यह बात फ्लाउंडर से नहीं कह सकता."

"क्यों नहीं कह सकते?" पत्नी बोली. "अभी, इसी पल जाओ. मुझे राजा बनना ही है." फिर वह आदमी चल पड़ा. लेकिन वह परेशान था कि उसकी पत्नी राजा बनना चाहती थी. "यह उचित नहीं है, बिलकुल भी उचित नहीं है," उसने सोचा. वह जाना नहीं चाहता था लेकिन फिर भी वह गया.

और जब वह समुद्र के किनारे पहुँचा तो बदबू से भरे पानी का रंग काला था और सागर के तल से उठ कर लहरें ऊपर उमड़ रही थीं. वह किनारे पर खड़ा हो गया और बोला:

"फ्लाउंडर, फ्लाउंडर सागर में रहते हो तुम
मैं बुलाता हूँ, जल्दी से आ जाओ तुम
मेरी पत्नी ने है भेजा मुझको
एक कामना उसकी पूरी कर दो तुम."

"ठीक है, अब उसे क्या चाहिए?" फ्लाउंडर ने कहा.

"अह," मछुआरे ने कहा, "वह राजा बनना चाहती है."

"बस वापस जाओ, वह पहले ही राजा बन चुकी है," फ्लाउंडर ने कहा.

मछुआरा लौट गया और जब वह महल के पास पहुँचा तो उसने देखा कि महल बहुत बड़ा हो गया था, शानदार गहनों से सजी एक बड़ी मीनार भी थी. प्रवेश द्वार पर प्रहरी खड़े थे और कई सैनिक थे और ढोल और ट्रम्पट भी थे. और जब वह घर के भीतर गया तो सब कुछ संगमरमर और शुद्ध सोने का बना था और दीवारों पर मखमल के परदे और सोने के बड़े-बड़े गुच्छे लटक रहे थे.

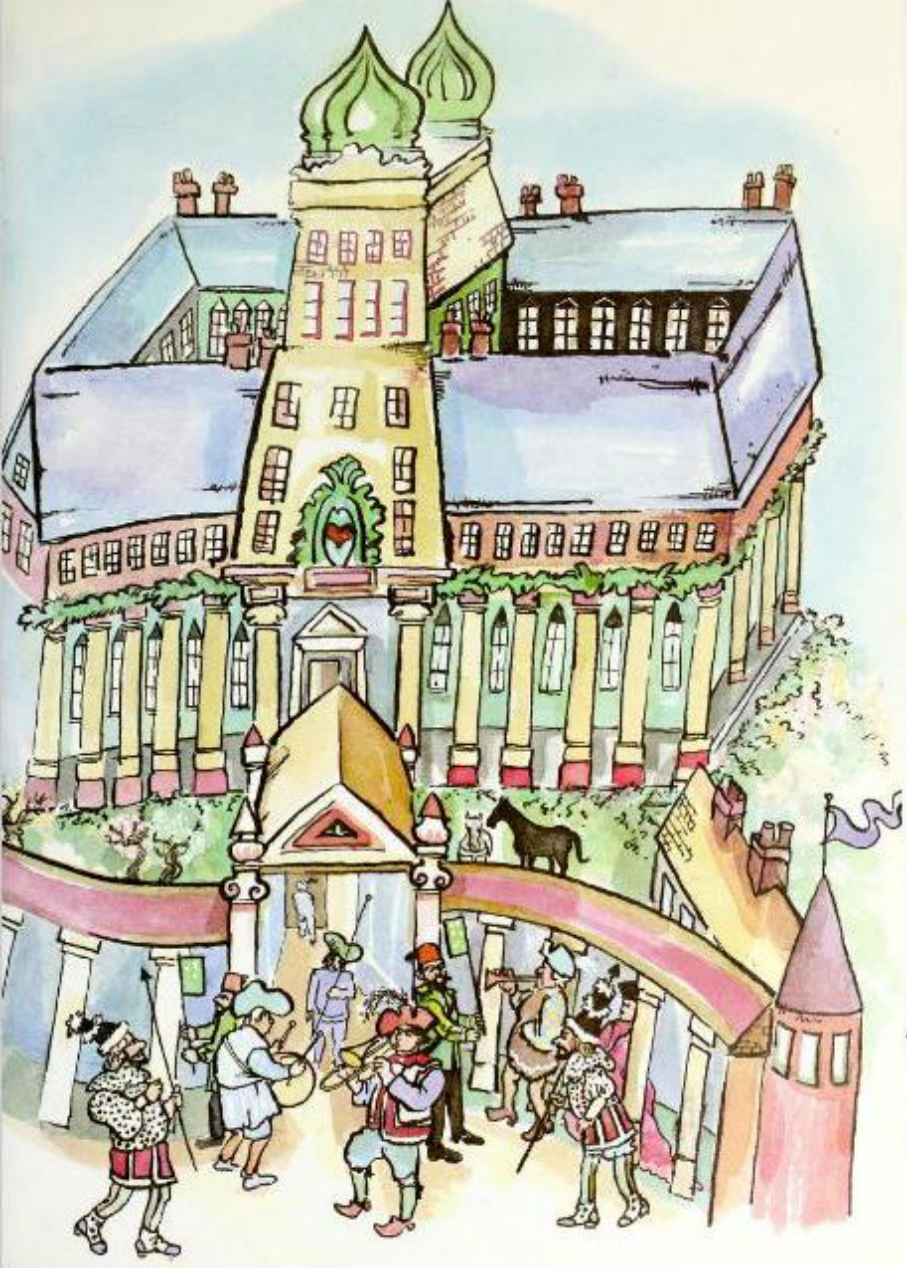

फिर हॉल के दरवाज़े खोल दिये गये, वहाँ सारा दरबार सजा था और सोने और हीरों से बने हुए एक ऊँचे सिंहासन पर उसकी पत्नी बैठी थी. उसने सोने का एक ताज पहन रखा था. उसके हाथ में एक राजदंड था जो बहुमूल्य रत्नों से जड़ित, ठोस सोने का था. उसके दोनों ओर छह-छह दासियाँ कतारों में खड़ी थीं, हर दासी उसके पहले खड़ी दासी से छोटी थी. वह निकट आया और खड़ा हो गया और फिर बोला, "अह, बीवी, क्या तुम राजा बन गई हो?"

"हाँ," पत्नी ने कहा, "अब मैं राजा हूँ." वह खड़े-खड़े उसे देखता रहा और जब लंबे समय तक मछुआरे ने उसे देख लिया तो उसने कहा, "अह, बीवी, कितना अच्छा है कि तुम राजा बन गई हो. अब हमें किसी बात की कामना करने की ज़रूरत नहीं."

"नहीं, पतिदेव," पत्नी ने कहा और वह बहुत उत्साहित थी, "समय सरकता जा रहा है और राजा होना अब मुझे अच्छा नहीं लग रहा. फ्लाउंडर के पास जाओ. मैं राजा हूँ, लेकिन अब मुझे सम्राट भी बनना है."

"अह, बीवी," मछुआरे ने कहा, "तुम किस लिए सम्राट बनना चाहती हो?"

"पतिदेव," पत्नी ने कहा, "फ्लाउंडर के पास जाओ. मुझे सम्राट बनना है."

"अह, बीवी," आदमी ने कहा, "वह सम्राट नहीं बना सकता. फ्लाउंडर से ऐसी बात मैं नहीं कह सकता. सारे साम्राज्य में एक ही सम्राट है. फ्लाउंडर सम्राट नहीं बना सकता, वह ऐसा नहीं कर सकता, बिलकुल नहीं कर सकता."

"क्या!" स्त्री चिल्लाई, "मैं राजा हूँ और तुम मेरी प्रजा हो. क्या तुम इसी समय जाओगे? इसी समय जाओ! अगर वह राजा बना सकता है तो वह सम्राट भी बना सकता है. मैं सम्राट बनना चाहती हूँ. इसी समय जाओ!"

मछुआरे को जाना पड़ा. लेकिन जाते-जाते वह भयभीत हो गया और सोचने लगा, "स्थिती तो बुरी से बुरी होती जा रही है. मेरी पत्नी तो बिलकुल निर्लज्ज है. आखिरकार, फ्लाउंडर नाराज़ हो ही जाएगा."

ऐसे सोचते हुए वह सागर तट पहुँच गया. समुद्र का पानी गहरा काला था और उबलता हुआ नीचे से ऊपर आ रहा था और उसमें से बुलबुले निकल रहे थे. तभी एक बवंडर सागर के ऊपर से गुज़रा और पानी गोल-गोल घूमने लगा. डर से आदमी के चेहरे का रंग उड़ गया. फिर वह किनारे आकर खड़ा हो गया और बोला:

"फ्लाउंडर, फ्लाउंडर सागर में रहते हो तुम
मैं बुलाता हूँ, जल्दी से आ जाओ तुम
मेरी पत्नी ने है भेजा मुझको
एक कामना उसकी पूरी कर दो तुम."

"तो वह क्या चाहती है?" फ्लाउंडर ने पूछा.

"अह, फ्लाउंडर," उसने कहा, "मेरी पत्नी अब सम्राट बनना चाहती है."

"बस वापस लौट जाओ," फ्लाउंडर ने कहा, "वह पहले ही बन चुकी है."

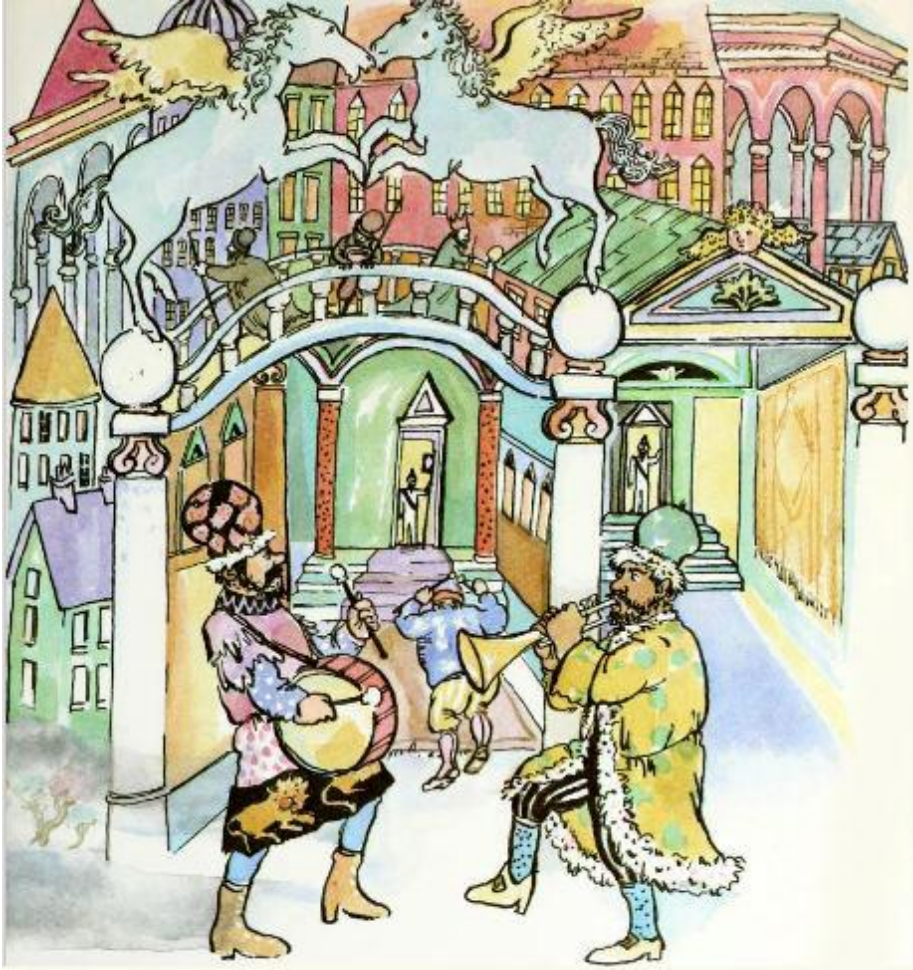

और जब मछुआरा वापस आया तो सारा महल चमकते हुए संगमरमर का बन चुका था, जिस पर सोने के गहनों से सजी बहुमूल्य पत्थरों की मूर्तियाँ लगी थीं. दवार के सामने सिपाही, ढोल और ट्रम्पट बजाते हुए, दायें-बायें मार्च कर रहे थे. महल के अंदर राजकुमार और सामंत यहाँ-वहाँ ऐसे घूम रहे थे कि जैसे वह दास थे.

उन्होंने उसके लिए दरवाज़े खोले जो सोने के बने थे. और जब वह भीतर गया तो उसने देखा कि उसकी पत्नी एक सिंहासन पर बैठी थी जो सोने का बना था और जो कम से कम दो मील ऊँचा था और उसने सोने का विशाल मुकुट पहन रखा था जो तीन गज़ ऊँचा था और जिस पर रक्तमणि और हीरे जड़े थे. एक हाथ में उसने राजदंड पकड़ रखा था और दूसरे हाथ में शाही सेब. उसके दोनों ओर दो कतारों में उसके रक्षक खड़े थे, हर रक्षक पहले खड़े रक्षक से छोटा था, सबसे विशाल रक्षक दो मील ऊँचा था और सबसे छोटा रक्षक हाथ की छोटी अंगुलि जितना छोटा था. और पत्नी के सामने कई राजकुमार और सामंत हाथ बांधे खड़े थे. मछुआरा आगे आया और उनके साथ खड़ा हो गया और बोला, “बीवी, अब तुम सम्राट बन गई हो?”

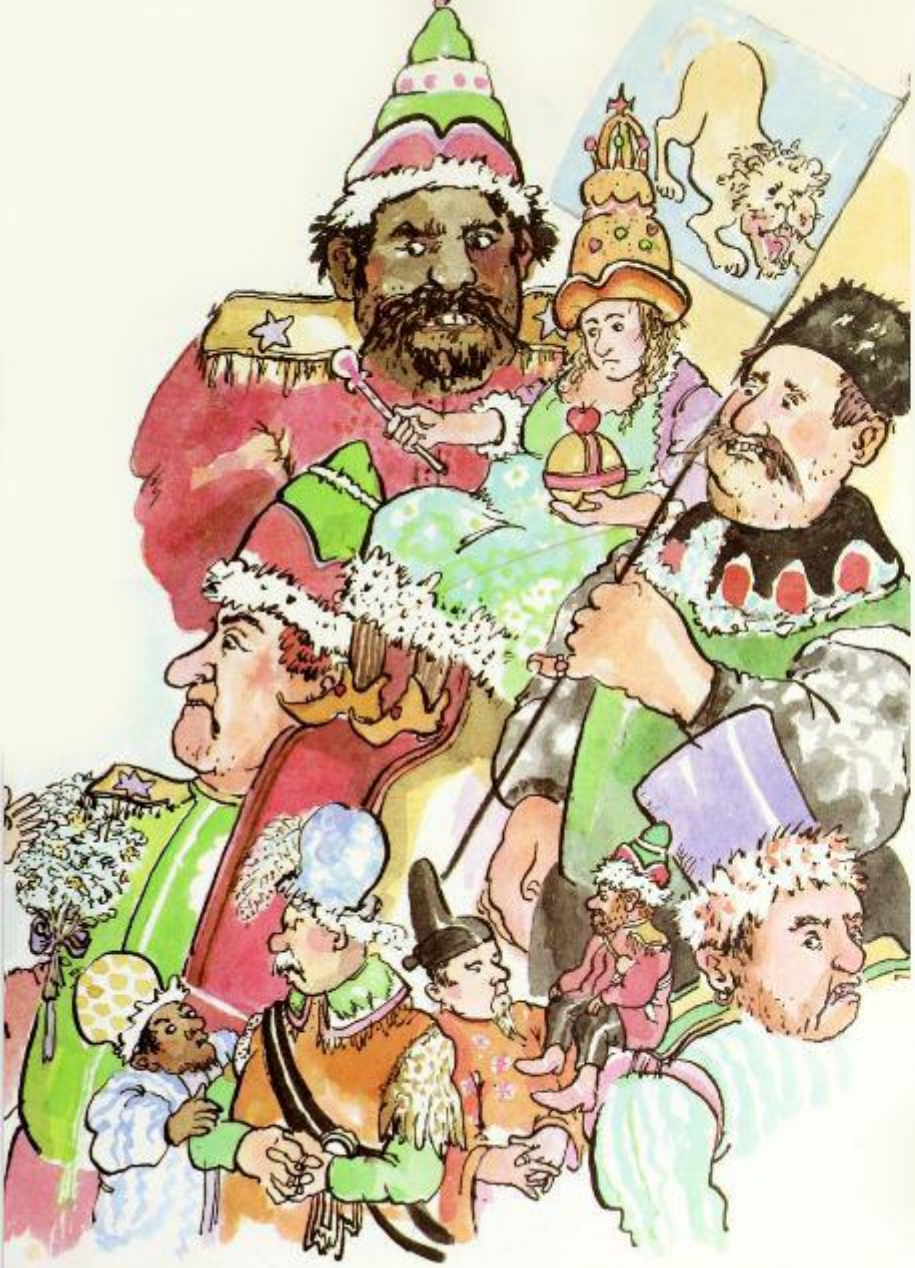

“हाँ,” पत्नी ने कहा, “मैं सम्राट हूँ.”

फिर निकट आकर उसने पत्नी को गौर से देखा. और बहुत देर तक देखने के बाद उसने कहा, “अह, बीवी, तुम्हारे लिए कितना अच्छा है कि तुम सम्राट हो.”

“पतिदेव,” वह बोली, “तुम खड़े-खड़े क्या कर रहे हो? अब मैं सम्राट हूँ, लेकिन मैं पोप भी बनना चाहती हूँ. फ्लाउंडर के पास जाओ.”

“अह, बीवी,” मछुआरे ने कहा. “तुम्हें क्या नहीं चाहिए? तुम पोप नहीं बन सकती. ईसाई जगत में एक ही पोप होता है. वह तुम्हें पोप बिलकुल नहीं बना सकता.”

“पतिदेव,” वह बोली, “मैं पोप बनना चाहती हूँ. अभी जाओ. मुझे आज ही पोप बनना है.”

“नहीं, बीवी,” मछुआरे ने कहा, “मैं उसे यह बात नहीं कह सकता. इस सब का अंत अच्छा न होगा. यह इच्छा उचित नहीं है. फ्लाउंडर तुम्हें पोप नहीं बना सकता.”

“पतिदेव, क्या बेकार की बात कर रहा हो,” पत्नी ने कहा, “अगर वह सम्राट बना सकता है तो पोप भी बना सकता है. अभी इसी पल जाओ. मैं सम्राट हूँ और तुम मेरी प्रजा हो. क्या तुम जाओगे?”

मछुआरा भयभीत था. वह समुद्र की ओर गया लेकिन वह घबराया हुआ था और काँप रहा था. उसकी टाँगें थरथरा रही थीं. धरती पर आँधी चल रही थी और आकाश में बादल उमड़ रहे थे. रात जैसा अँधेरा हो गया थी और पेड़ों से पत्ते गिर गये थे. सागर में लहरें ऐसे हिलोरें मार रही थीं कि जैसे पानी उबल रहा हो, लहरें ऊँची उठ कर तट से टकरा रही थीं. दूर समुद्र के अंदर, लहरों पर उठते-गिरते जहाज़ संकट-संकेत भेज रहे थे. फिर भी आकाश के बीच में छोटा सा एक ऐसा भाग था जो नीला था, हालांकि हर ओर आकाश लाल था और लग रहा था के एक भयंकर तूफान आने वाला था. मछुआरा समुद्र तट पर खड़ा था, वह निराश और डरा हुआ था. उसने कहा:

"फ्लाउंडर, फ्लाउंडर सागर में रहते हो तुम
मैं बुलाता हूँ, जल्दी से आ जाओ तुम
मेरी पत्नी ने है भेजा मुझको
एक कामना उसकी पूरी कर दो तुम."

"तो वह क्या चाहती है?" फ्लाउंडर ने पूछा.

"अह, फ्लाउंडर," उसने कहा, "मेरी पत्नी पोप बनना चाहती है."

"बस वापस जाओ, वह पहले ही बन चुकी है," फ्लाउंडर ने कहा.

फिर वह लौट गया और जब वह घर पहुँचा तो उसने देखा कि वहाँ एक विशाल चर्च थी जिसके आसपास महलों के सिवाय कुछ और न था. वह थकेलते हुए भीड़ में आगे गया. भीतर हज़ारों मोमबत्तियों के प्रकाश में सब कुछ जगमगा रहा था. उसकी पत्नी ने सोने के बने वस्त्र पहन रखे थे. एक बहुत ऊँचे सिंहासन पर वह बैठी थी. उसने सोने के तीन विशाल मुकुट पहन रखे थे और उसके चारों ओर खूब ठाट-बाट और धूमधाम थी. उसके दोनों ओर मोमबत्तियों की दो कतारें थीं, सबसे बड़ी मोमबत्ती चर्च के सबसे बड़े बुर्ज जितनी ऊँची और मोटी थी और सबसे छोटी किचन की मोमबत्ती जितनी छोटी थी. सारे सम्राट और राजा उसके सामने घुटनों पर झुके हुए थे और उसके पाँव चूम रहे थे.

"बीवी," मछुआरे ने उसकी ओर सीधे देखते हुए कहा, "क्या अब तुम पोप हो?"

"हाँ," वह बोली, "मैं पोप हूँ."

फिर वह सामने आकर उसे देखने लगा और उसे ऐसा लगा कि वह चमकते हुए सूरज की ओर देख रहा था. जब इस तरह उसने उसे लंबे समय तक देखा तो वह बोला, "अह, बीवी, तुम्हारे लिए कितना अच्छा है कि तुम पोप बन गई."

लेकिन वह अकड़ कर सीधी बैठी रही और ज़रा भी हिली-डुली नहीं.

फिर उसने कहा, "बीवी, अब संतुष्ट हो जाओ. अब तुम पोप हो. अब तुम कुछ और नहीं बन सकती."

"मैं इसके बारे में सोचूंगी," वह बोली. इस के बाद वह दोनों सोने चले गए.

लेकिन वह संतुष्ट नहीं थी. उसका लालच उसे सोने न दे रहा था. हर पल वह सोचती रही कि वह और क्या बन सकती थी.

मछुआरा गहरी नींद सोया रहा-उस दिन वह बहुत पैदल चला था-लेकिन उसकी पत्नी बिलकुल न सो पाई और सारी रात करवट बदलती रही. और हर समय इसी सोच में रही कि वह और क्या बन सकती थी, लेकिन उसे कुछ समझ न आ रहा था. जैसे ही सूर्य उदय होने वाला था और जैसे ही उसने भोर की लालिमा देखी, वह बिस्तर में सीधी बैठ गई और घूर कर बाहर देखने लगी, और जैसे ही उसने खिड़की के बाहर देखा, सूर्य उदय हो गया. "अहा!" उसने सोचा, "क्या सूर्य और चंद्र को भी मैं उदय नहीं कर सकती?"

"पतिदेव," उसने कहा और उसकी पसलियों में अपनी कोहनी चुभाई, "उठो और फ्लाउंडर के पास जाओ. मैं महान ईश्वर के समान बनना चाहती हूँ."

मछुआरा अभी नींद में ही था लेकिन पत्नी की बात सुन कर इतना डर गया कि बिस्तर से नीचे गिर गया. उसने सोचा कि उसने कुछ गलत सुना था और उसने अपनी आँखें रगड़ी और कहा, "ओह, बीवी, तुम क्या कह रही हो?"

"पतिदेव," पत्नी ने कहा, "अगर मैं सूर्य और चंद्र को उदय नहीं कर पाई और सूर्य और चंद्र को सिर्फ उदय होते देखती रही तो मैं सहन नहीं कर पाऊँगी. जब तक मैं सूर्य और चंद्र को उदय नहीं कर पाती तब तक मुझे मन की शांति न मिलेगी." फिर उसने मछुआरे को इतने भयानक दृष्टि से देखा कि वह काँप गया. "अभी इसी पल जाओ. मैं महान ईश्वर के समान बनना चाहती हूँ."

"ओह, बीवी," मछुआरे ने पत्नी के सामने घुटनों के बल झुकते हुए कहा, "फ्लाउंडर ऐसा नहीं कर सकता. वह पोप और सम्राट बना सकता है-मैं विनती करता हूँ, फिर से सोचो और पोप बनी रहो." इस पर पत्नी इतनी क्रोधित और हिंसक हो गई कि उसके सिर के बाल हवा में सीधे खड़े हो गए, उसने अपना गाउन फाड़ डाला और पति को ठोकर मारने लगी और चीखती हुई बोली, "मैं सहन नहीं कर सकती, मैं और सहन नहीं कर सकती! क्या तुम जाओगे!"

उसने अपने कपड़े ठीक किए और एक पागल की तरह दौड़ पड़ा. लेकिन बाहर प्रचंड तूफान चल रहा था और उसके लिए अपने पाँव स्थिर रखना मुश्किल हो रहा था, पेड़ गिर रहे थे, घर गिर रहे थे और पहाड़ काँप रहे थे चट्टानें लुढ़क कर सागर में गिर रही थीं. आकाश में घोर अँधेरा था, बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी. सागर के काले पानी में मीनारों और पहाड़ों जितनी ऊँची लहरें उठ रही थीं और सब लहरों के ऊपर सफेद झाग थी. वह चिल्लाया लेकिन उसे अपनी आवाज़ भी सुनाई न दी:

“फ्लाउंडर, फ्लाउंडर सागर में रहते हो तुम
मैं बुलाता हूँ, जल्दी से आ जाओ तुम
मेरी पत्नी ने है भेजा मुझको
एक कामना उसकी पूरी कर दो तुम.”

“तो वह क्या चाहती है?” फ्लाउंडर ने पूछा.

“अह, फ्लाउंडर,” उसने कहा, “मेरी पत्नी महान ईश्वर के समान बनना चाहती है.”

“बस वापस जाओ, वह पहले ही फिर से सूअर के बाड़े में बैठी है.”

और आज तक वह दोनों सूअर के बाड़े में ही बैठे हैं.

समाप्त